फिजी। विश्व हिन्दु परिषद् द्वारा 'सस्टेनिंग द फिजीयन कम्युनिटी थ्रू द हेल्थ बेनीफिट्स ऑफ योगा मेडिटेशन एंड आयुर्वेदा' विषय पर आयोजित सेकेंड फिजी नेशनल हिन्दु कॉन्फ्रेन्स के दौरान समूह चित्र में फिजी के राष्ट्रपति महामहिम रतु एपेली नैलातिकौ, ब्र.कु. शान्ता व अन्य।

चाइना-गुआंगज़ो। द कॉन्स्युलेट ऑफ इंडिया और गुआंगज़ो पीपल्स एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में सभी को राजयोग की अनुभूती कराते हुए ब्र.कु. सपना। कार्यक्रम में उपस्थित रहे द कॉन्स्युलेट जेनरल ऑफ इंडिया व अन्य योगा टीचर्स।

सेक्रेमेन्टो। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सभी को योगाभ्यास कराते हुए ब्र.कु. हंसा।

सिंगापुर। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास करते वहां के भाई बहनें।

स्पेन। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास करते हुए वहां के भाई बहनें।

टोरोन्टो। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशाल जनसमूह को योगाभ्यास कराते हुए ब्र.कु. शशि तथा अन्य।

त्याग और भोग से परे, संत

- ब्र.कु. मोनिका,शांतिवन

अध्यात्म जगत में कबीर एक अनोखे संत थे। अनोखे इसलिए कि वे बिल्कुल अनपढ़ थे, लिखना-पढ़ना उनको आता ही नहीं था, इसलिए बहुत सारे शास्त्र पढ़कर उन्हें ज्ञान हुआ हो ऐसा नहीं है। वे बहुत ही गरीब परिवार में पले-बड़े हुए थे। ज़िन्दगी भर कपड़ा बुनने का काम करते रहे। सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी यदि उसकी गहरी प्यास हो, तो परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। उसी तरह कबीर एक अनपढ़, गरीब और बिल्कुल ही छोटा सा काम करने वाले व्यक्ति के लिए भी परमात्मा के द्वार खुल गये।

कबीर के पास अनेक लोग सत्संग करने आते, सत्संग या भजन पूरा होने पर कबीर सबको कहते कि प्रसाद लेकर ही जाना। घर में कुछ भी बना हो, तो सबको खिलाकर ही फिर खुद भोजन करते थे। कपड़े बुन-बुनकर कितना कमा सकते हैं? इसलिए कोई न कोई वहां आकर कबीर को अनाज, पैसे, चीज़, वस्तु या ऐसा कुछ और देकर जाते, लेकिन कबीर तो यही कहते कि किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। एक निरहंकारी और त्यागी संत के रूप में उनकी प्रतिष्ठा थी।

अब जरा कमाल को देखें.....

कबीर का एक पुत्र भी था। ``कमाल उसका नाम था, नाम जैसा उसका गुण भी था, क्योंकि कबीर से भी ज़्यादा प्रतिभाशाली उसका व्यक्तित्व था। कबीर के पास कोई पैसा या कोई वस्तु देने जाता तो वे ना कहते थे। लेकिन कमाल को पूछा जाए तो वो खुशी से सबकुछ ले लेता था। कई बार तो कई लोग कबीर को देने के लिए आते थे और कबीर के ना कहने पर वे वापस ले जाते तो उनका पुत्र कहता कि वापस क्यों ले जाते हो यहीं रख दो!'' इस तरह कबीर से विपरीत कह सकें ऐसा उसका व्यक्तित्व था।

कबीर के भक्त कमाल के ऐसे वर्तन से नाखुश थे क्योंकि इससे संत की प्रतिष्ठा ओछी हो जाती थी, ऐसा समझ कबीर के भक्तों ने कबीर के पास फरियाद की। कबीर ने कमाल को बुलाकर कहा कि तेरे बारे में सब ऐसा सोचते हैं, तो तुम्हारा क्या प्रतिभाव है? पिता के सामने कोई भी बचाव किए बिना ही उसी दिन कमाल ने एक दूसरी झोपड़ी बनाकर रहना आरंभ कर दिया।

काशी नरेश को इस बात का पता चला, उसे ऐसा लगता था कि कमाल तो बहुत लोभी, भोगी और संग्रह प्रवृत्ति का होगा, लेकिन स्वयं ही वहां जाकर इस बात को नज़दीक से देख लेना चाहिए, ऐसा समझ एक मूल्यवान हीरा लेकर वे वहां पहुंचे। कमाल को उन्होंने वो हीरा दिया तो उसने कहा अरे! इस पत्थर का मुझे क्या काम? उससे तो न खाया जा सकता, न पिया जा सकता, उसे यहां रखकर मैं क्या करुंगा?

काशी नरेश का भ्रम टूटा...

उन्हें लगा, लोग तो ये कहते हैं कि उसे कुछ भी दे दो तो वो ले लेता है, और मैंने तो लाखों का हीरा दिया तो वो इंकार कर रहा है, इसका अर्थ हुआ कि लोगों के उनके प्रति जो विचार हैं वो सही नहीं हैं। ऐसा विचार करके नरेश हीरा वापस लेकर जाने लगे, तभी कमाल ने कहा, अरे! ये क्या करते हो? पत्थर का ये टुकड़ा आप अपने घर से उठाकर लाये और अब वापस ले जाते हो! पागल तो नहीं हो गए आप? रख दो यहीं।

छोड़ना या पकड़ना दोनों ही जिस क्षण व्यर्थ बन जाता है, उसी क्षण व्यक्ति में संतत्व का उदय होता है। सच्चे संत का जीवन सदा 'साक्षी' जैसा होता है। साक्षी को अच्छा या बुरा कुछ भी स्पर्श नहीं करता। जो दानों द्वन्द्व से ऊपर उठकर देखते हैं और जीते हैं, वे ही सच्चे संत हैं।

राजा को तुरंत शंका हुई कि इस व्यक्ति में कुछ न कुछ गड़बड़ है। पहली बात तो उसे अच्छी लगी कि पत्थर का टुकड़ा लेकर मैं क्या करुंगा, वो बात उनका हृदय स्पर्श कर गई, लेकिन दूसरी बात उन्हें समझ में नहीं आई। त्याग तो मनुष्य को आकर्षित करता ही है, लेकिन जिनका कुछ भी मूल्य या महत्व नहीं है, उसे पकड़ने की क्या ज़रूरत है, ये बात जल्दी से समझ में नहीं आती।

संदेह के साथ राजा ने पूछा: तो फिर मैं इस हीरे को कहा रखूं?

कमाल ने कहा: ``आपका सवाल ही बताता है कि आप अभी भी उसे पत्थर नहीं मानते। यदि आपके मन में उसका मूल्य है तो उसको वापस ले जाओ। उसमें पूछने की क्या ज़रूरत?''

फिर भी परीक्षा करने के लिए राजा ने कहा, इस झोपड़े के छज्जे में मैं इसे रखकर जाता हूँ। तो कमाल ने कहा:`आपकी मर्ज़ी। बाकी वहां उस छज्जे पर रखने की क्या ज़रूरत है'?

क्या देखा नरेश ने...

पूरा एक महीना बीत गया। एक दिन अचानक काशी नरेश फिर से कमाल की झोपड़ी में आ पहुंचे। उनको पता ही था कि दूसरे दिन ही उसने उस हीरे को छज्जे से निकालकर छुपा दिया होगा या तो उसे बेच दिया होगा। नरेश ने आकर कमाल से पूछा कि, एक महीने पहले मैं यहां एक हीरा रखकर गया था, वो कहां है? कमाल ने कहा: `कैसी बात करते हो? मैंने तो उसी वक्त कहा था कि पत्थर के टुकड़े को यहां किसलिए रखकर जाते हो? हो सकता है कोई निकालकर ले भी गया होगा फिर भी आपने जहां रखा था वहां जाकर देख लो, मुझे तो याद भी नहीं है!' सम्राट की शंका दृढ़ हो गई, उसके मन में आया कि मुझे तो ख्याल ही था कि ऐसी कुछ न कुछ गड़बड़ होगी, और ये तो वैसे भी चालबाज़ व्यक्ति लगता है, फिर भी उसने देखने मात्र के लिए देखा तो हीरा तो वहीं पड़ा था!

नरेश को अपनी भूल समझ में आई। संत के प्रति उसकी शंका बदली, उसे इस बात का प्रायश्चित भी हुआ, उसकी आँख खुल गई और ख्याल भी आया कि सच्चे संत त्याग और भोग दोनों से परे होते हैं। छोड़ना और पकड़ना दोनों ही जिस क्षण व्यर्थ बन जाता है, उसी ही क्षण व्यक्ति में संतत्व का उदय होता है। सच्चे संत का जीवन सदा `साक्षी' जैसा होता है। साक्षी को अच्छा या बुरा कुछ भी स्पर्श नहीं करता। जो दोनों द्वन्द्व से ऊपर उठकर जीते हैं, वे ही सच्चे संत हैं।

नैरोबी। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर द गवर्नमेंट ऑफ केन्या, यूनिवर्सिटी ऑफ नैरोबी, यूनाइटेड नेशन्स, बिडको ऑयल कम्पनी, आर्ट ऑफ लिविंग व अन्य संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम में योगाभ्यास करते भाई बहनें।